यशोधरचरित

सचित्र पाण्डुलिपियाँ

डॉ० कमला गर्ग

यशोधरचरित
सचित्र पाण्डुलिपियाँ

डॉ० (श्रीमती) कमला गर्ग
वरिष्ठ प्रवक्ता, ललित कला संकाय
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

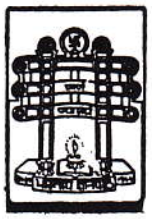

भारतीय ज्ञानपीठ

मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थांक 22

यशोधरचरित : सचित्र पाण्डुलिपियाँ

डॉ० (श्रीमती) कमला गर्ग

© भारतीय ज्ञानपीठ

प्रथम संस्करण : 1991
मूल्य :75/-

प्रकाशक :
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003

मुद्रक :
श्री प्रिंट्स एण्ड सेल्स,
धर्मपुरा, दिल्ली-110006

आवरण : पुष्पकणा मुखर्जी

YASHODHAR-CHARITA : SACHITRA PANDULIPIYAN
By Dr. Kamala Garg. Published by Bharatiya Jnanpith, 18, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi-110003. Photocomposed by Advertising India, Shahdara, Delhi-110032 and Printed at Shri Prints & Sales, Dharampura, Delhi-110006. First Edition : 1991, Price Rs. 75/-

एकत्रित किए गए हैं। पृष्ठभूमि में विविध प्रकार के वृक्ष एवं आकाश में उड़ता हुआ हंसयुगल दिखाया गया है।

जय.महा.पा. के एक अन्य चित्र (क्र. 9) में मन्दिर के मध्य कमलाशन पर चण्डिका देवी विराजमान हैं। शत्रुओं के दमन हेतु उसने अपनी चारों भुजाएँ विविध अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित की हुई हैं। जैन धर्मानुसार यह राग-द्वेष आदि हिंस्र भावों का परिचायक है। संसार के प्राणियों को त्रस्त करने हेतु मन्दिर के पार्श्व में चण्डिका के वाहन सिंह की मूर्ति बनाई गई है। इस देवी के सम्मुख अपनी माता चन्द्रमती के कहने में आकर उसके साथ राजा यशोधर द्वारा अपने दुःस्वप्न की शांति हेतु लाई गई विविध सामग्री एवं पिष्टनिर्मित मुर्गा देवी के अग्रभाग में रखे हुए हैं। सम्पूर्ण चित्र उस समय प्रचलित अन्धविश्वास का द्योतक है।

(2) उपदेश सम्बधी चित्र

इन पाण्डुलिपियों के चित्रों में जहाँ एक ओर भक्तिपूर्ण चित्रों की बहुलता है, वहाँ उपदेश विषयक चित्रों की भी कमी नहीं है। वस्तुतः आध्यात्मिक मार्ग में सम्यक् उपदेश द्वारा ही जीवों में निहित भव-विषयक विषय-कषायों, माया-मोह एवं राग-द्वेष रूप परिणति को विध्वंस किया जा सकता है जिससे जीव वस्तु-तत्त्व को उचित रूप में समझकर तद्रूप क्रिया करने में समर्थ हो सकें। उदाहरणार्थ–

ब्या. पा. के एक चित्र (10) में सुदत्ताचार्य संघ सहित विराजमान हैं। वे अपने संघ के निर्ग्रन्थ मनि एवं क्षल्लिकाओं को नरक के कष्टों का वर्णन करके उपदेश दे रहे हैं। नरक के घात-विघात

10. अपने संघ को नारकीय दुःखों का वर्णन करते हुए सुदत्ताचार्य (ब्या.पा.)

आदि असह्य दुःखों को चित्र के एक भाग में पृथक् रूप से दिखाया गया है। नीचे भयंकर विशाल अग्नि-पुंज है, जिसमें नारकी अपने पूर्व भव जनित ईर्ष्या, डाह को स्मरण कर परस्पर देह के तिल-तिल खण्ड करके उस भयंकर अग्नि में क्षेपण कर रहे हैं। ऊर्ध्वभाग में जीवित प्राणी के नेत्रों को अपनी तीक्ष्ण चंचुओं द्वारा निकालते हुए नरक-पक्षी दिखाए गए हैं। क्षुधा को न सहन करने वाले मांसभक्षी पशु अपनी उदरपूर्ति हेतु अवशिष्ट देह पर बुरी तरह से झपट रहे हैं। नरक के इन

महान् कष्टों को देखकर भी कौन ऐसा वज्रहृदयी व्यक्ति होगा जो इनसे अभिज्ञ होकर भी तत्क्षण घोर नरक रूप भव में पटकने वाले निन्द्य कर्मों से मुक्त होना नहीं चाहेगा?

दि.पा. के एक चित्र (क्र. 11) में राजदरबार का दृश्य है, जिसमें क्षुल्लक अभयरुचि अपने सम्मुख उपस्थित राजा मारिदत्त, मंत्री व राजसेवकगण आदि को अपनी पूर्व भवावली का उपदेश दे रहे हैं। राजा मारिदत्त के पार्श्व में एक राजसेवक चँवर ढुला रहा है। शेष चारों मन्त्री मूर्तिवत् एकाग्रचित्त होकर क्षुल्लक् अभयरुचि के उपदेश को सुन रहे हैं। कुछ मंत्री क्षुल्लक जी के समीप बैठे हुए विस्मय की मुद्रा में उनकी पूर्व भवावली को सुन रहे हैं। पूरे चित्र में सभी आकृतियों का ध्यान क्षुल्लक अभररुचि की ओर ही केन्द्रित है।

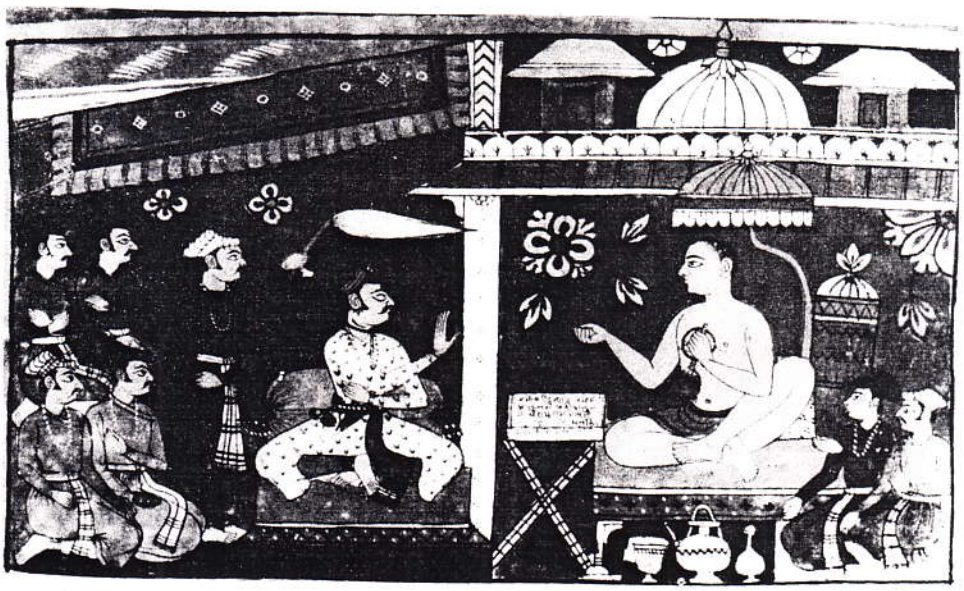

11. राजा मारिदत्त के दरबार में क्षुल्लक अभयरुचि (दि.पा.)

(3) उपसर्ग सम्बन्धी चित्र

संसार की लीला बड़ी विचित्र है। इस विषम संसार में जहाँ एक ओर अनेक व्यक्ति मुनिजनों की स्तुति, वन्दना, आराधना आदि करते हैं और धार्मिक क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु अपना पूर्ण योगदान देते हैं, वहाँ दूसरी ओर अनेक निकृष्ट लोग दुस्तर संसार के माया-मोह में फँसकर रागद्वेषवश वीतरागी महापुरुषों के गुणों को न सहन कर सकने के कारण दुर्वचन बोलते हैं, अनेक प्रकार से कष्ट देते हैं, बाधा पहुँचाते हैं तथा उनके हनन हेतु विविध प्रकार के दुःसाहसपूर्ण कृत्य कर डालते हैं।

दि पा. का एक अन्य चित्र (क्र. 12) दो भागों में विभाजित है। राजा मारिदत्त ने आकाशगमन की अपनी इच्छापूर्ति हेतु पाखण्डी भैरवानन्द द्वारा निर्दिष्ट बलि-आयोजन हेतु एक नर-युगल पकड़कर लाने के लिए राजकिंकरों को आदेश दिया। नर-युगल की खोज में तत्पर किंकरगण ऐसे निर्जन स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक क्षुल्लक-युगल (क्षुल्लक-क्षुल्लिका) सुदत्त मुनि की अनुमति लेकर भिक्षार्थ नगर की ओर गमन कर रहे थे।

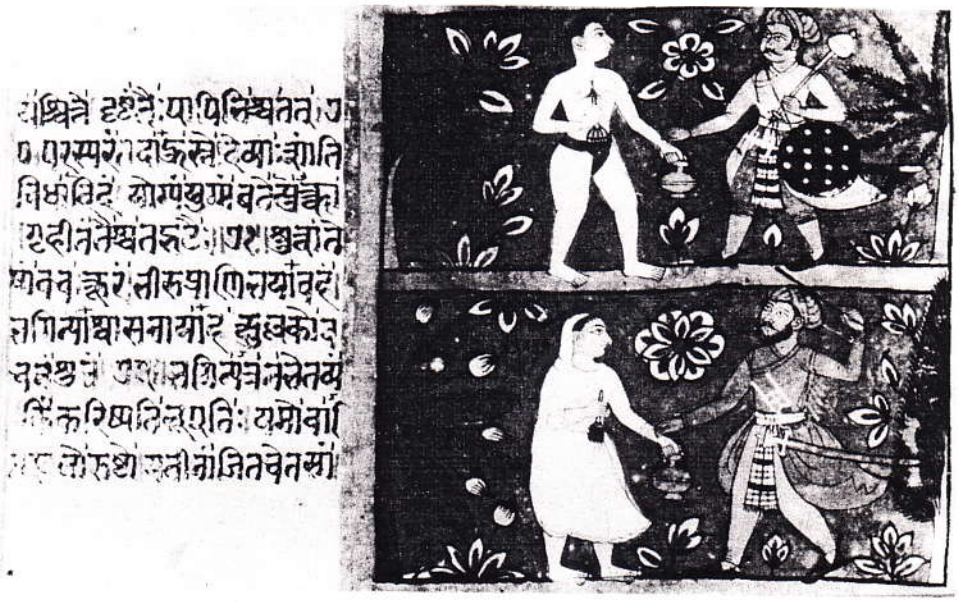

12. क्षुल्लक एवं क्षुल्लिका को पकड़े हुए किंकर (दि.पा.)

चित्र के ऊर्ध्व भाग में क्षुल्लक को एक किंकर ने अपने साथ ले जाने के लिए रोक लिया है। अधोभाग में क्षुल्लिका को भी दूसरे किंकर ने उसी प्रकार रोककर भय दिखाने हेतु डण्डा भी उठाया हुआ है। अकारण ऐसा होने पर भी क्षुल्लक अथवा क्षुल्लिका के मुख पर कोई मलिनता दृष्टिगोचर नहीं होती।

(4) परमात्म-पुरुष सम्बन्धी चित्र

बहुप्रचलित मान्यतानुसार दैनिक आचार-व्यवहारादि अथवा विशिष्ट आवसरिक क्रियाओं के प्रारम्भ करने से पूर्व अपने सर्वाधिक इष्ट देवी-देवता आदि का स्मरण किया जाता है। जैन धर्मावलम्बियों के परम इष्ट पाँच हैं, जो पंचपरमेष्ठी कहलाते हैं। ये हैं—अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु।

यशोधर-चरित एक दिगम्बर जैन ग्रन्थ होने के कारण महाकवि पुष्पदन्त तथा हरिषेण आदि आचार्यों ने भी अपनी-अपनी रचना की निर्विघ्न समाप्ति हेतु चतुर्विंशति तीर्थंकरों आदि की स्तुति की है। चित्रकारों ने भी कथानक के सन्दर्भ में परमात्मपुरुषों के चित्रों को बड़े सुव्यवस्थित ढंग से उपस्थित किया है।

ब्या.पा. का एक चित्र (क्र. 13) आदि-तीर्थंकर ऋषभनाथ की स्तुति का है। चित्र के मध्य में विराजमान प्रतिमा श्री ऋषभदेव की है क्योंकि उनका चिह्न 'वृषभ' प्रतिमा की चौकी के अग्रभाग में स्थित है। प्रतिमा के ऊर्ध्व भाग में तीन छत्र सुशोभित हैं तथा उसके दोनों पार्श्वों में एक-एक देव हाथ में माला लिये तथा दूसरे हाथ में चँवर ढुलाते हुए चित्रित हैं।

13. आदि तीर्थंकर ऋषभदेव (ब्या.पा.)

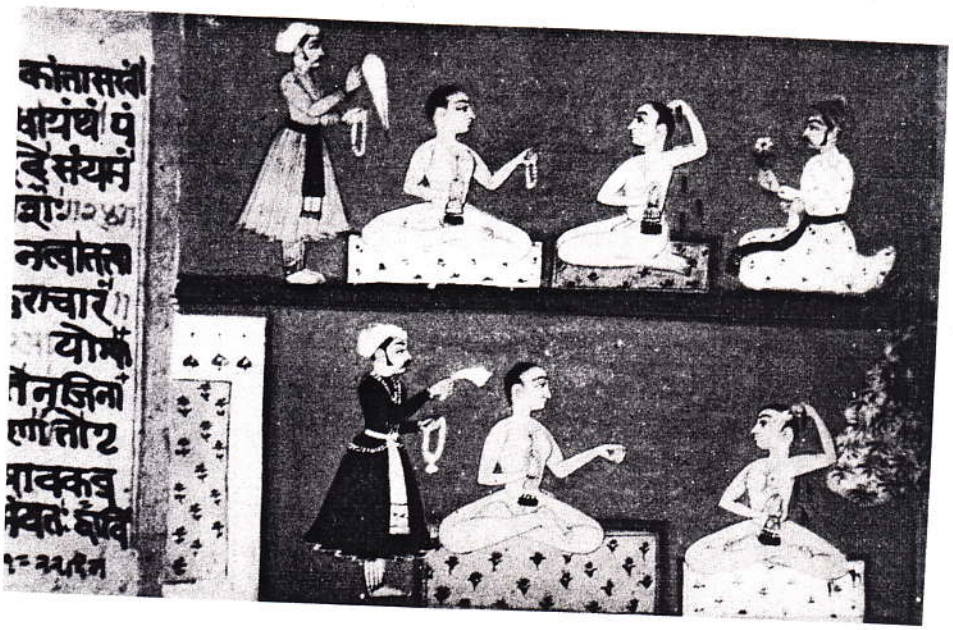

14. केशलोंच (सवा.मा.पा.)

(5) अन्य पूज्य पुरुष सम्बन्धी चित्र

ग्रन्थ की पाण्डुलिपियों के चित्रों में पूज्य पुरुष सम्बन्धी चित्र-संख्या बहुल है। परमात्म-पद की प्राप्ति हेतु जीव को मोहजन्य इन्द्रिय विषय, कषाय तथा मिथ्यात्व आदि पर विजय प्राप्त कर

वीतरागी व ज्ञानी बनना होता है, जो गृहस्थावस्था में सम्भव नहीं। अतः जब जिस क्षण जिनके हृदय में अपनी आत्मा के प्रति सच्ची भक्ति की लहर दौड़ जाती है, तत्क्षण वे अनन्त मोहनिद्रा से जाग उठते हैं और अपनी सम्पदा, स्त्री-पुरुष, राज्य वैभव आदि के सुख तथा ऐश्वर्य आदि का भी सर्वथा त्याग कर निवर्सन (मात्र चतुर्दिशा रूपी वसन धारण कर) होकर निर्जन स्थान में जाकर एकाकी रूप से उस आत्मस्वरूप का चिन्तवन करके पूर्ण वीतरागी होने का उद्यम करते हैं। मुख्यतः मुनिराज, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि के आचार-व्यवहार सम्बन्धी चित्र इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

सवा.मा.पा. से सम्बन्धित एक चित्र दो भागों में विभक्त है। दोनों ही भागों में एक मुनि केशलोंच करते और दूसरे उन्हें अवलोकन करते हुए चित्रित हैं। चित्र के ऊर्ध्व भाग में दो और अधोभाग में एक गृहस्थ भी मुनियों की सेवा में उपस्थित हैं (चित्र क्र. 14)।

ब्या.पा. के एक अन्य चित्र में, हाथ में कमण्डलु एवं पीछी लिये मुनिजन सुदत्ताचार्य से

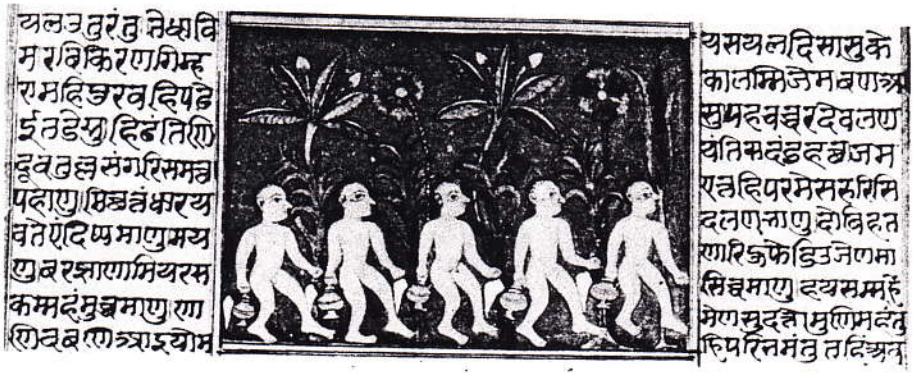

15. मुनिसंघ आहार-विहार चर्या (ब्या.पा.)

अनुमति लेकर नगर में आहार ग्रहण करने हेतु भयंकर निर्जन वन से गमन कर रहे हैं। चित्रकार ने इन मुनियों को कदम मिलाकर चलते हुए चित्रित किया है (चित्र क्र. 15)।

(6) लोक सम्बन्धी चित्र

इन पाण्डुलिपियों में दो चित्र (क्र० 16 अ-ब) लोक-सम्बन्धी भी हैं। ग्रन्थकथा के आरम्भ में यौधेय देश और उसके अन्तर्गत राजपुर नगर का सुन्दर वर्णन है। धरा पर उनकी स्थिति बताने के लिए जम्बूद्वीप का प्रसंग आया है। पाण्डुलिपि में इसी जम्बूद्वीप को चित्रित करके दिखाया गया है। दूसरा चित्र 'लोक' का है। आचार्य सुदत्त अभयरुचि और अभयमति को क्षुल्लक दीक्षा देने से पूर्व उन्हें बारह भावनाओं का स्वरूप समझाते हैं। उन्हीं भावनाओं में लोक-भावना का वर्णन करते समय वे लोक तथा उसकी रचना आदि के विषय में प्रकाश डालते हैं।

जय.महा.पा. का यह चित्र (क्र. 16 क) मध्यलोक मे स्थित जम्बूद्वीप का है। यह द्वीप असंख्यात द्वीप-समुद्रों के बीच स्थित है। थाली के समान गोल, इस द्वीप का विस्तार (व्यास) एक लाख योजन है। इसे सभी ओर से वेष्टित करके चूड़ी के आकार में स्थित लवणसमुद्र का विस्तार जम्बूद्वीप से दुगुना है, अर्थात् लवणसमुद्र की सभी ओर मोटाई दो लाख योजन है। इस जम्बूद्वीप में

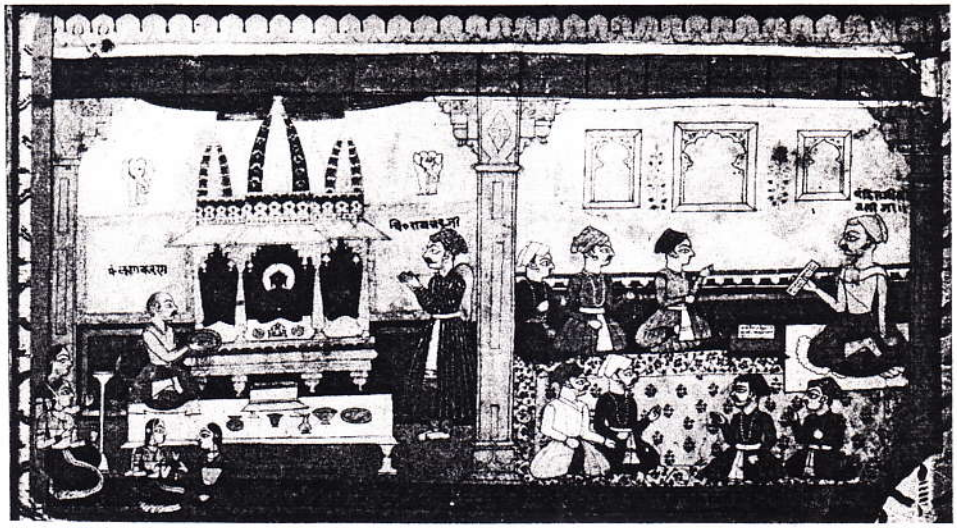

19. लूणकरण जी पाण्डया मन्दिर का पृष्ठ भाग (जय०लूण०पा०)

20. सुदत्ताचार्य के समक्ष मुनि-दीक्षा की याचना करते हुए राजा मारिदत्त व नवदीक्षित मुनि अभयरुचि और आर्यिका अभयमती का वन-गमन (दि०पा०)

(ख) सामाजिक चित्र

यद्यपि 'यशोधर-चरित' में आध्यात्मिकता के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करने वाले चित्रों की बहुलता है, तथापि राजा यशोधर और अन्य जनों से सम्बन्धित व्यक्तिगत तथा सामाजिक गतिविधियों को इंगित करनेवाले ऐसे अनेक चित्र हैं जो कथानक एवं धार्मिक चित्रों को आश्रय तथा

38. श्रामण्योद्यत यशोमति के पास अभयरुचि व अभयमती अपने सहचरों सहित (ना.पा.)

39. आहार के लिए चर्यारत क्षुल्लक अभयरुचि व क्षुल्लिका अभयमती (दि.पा.)

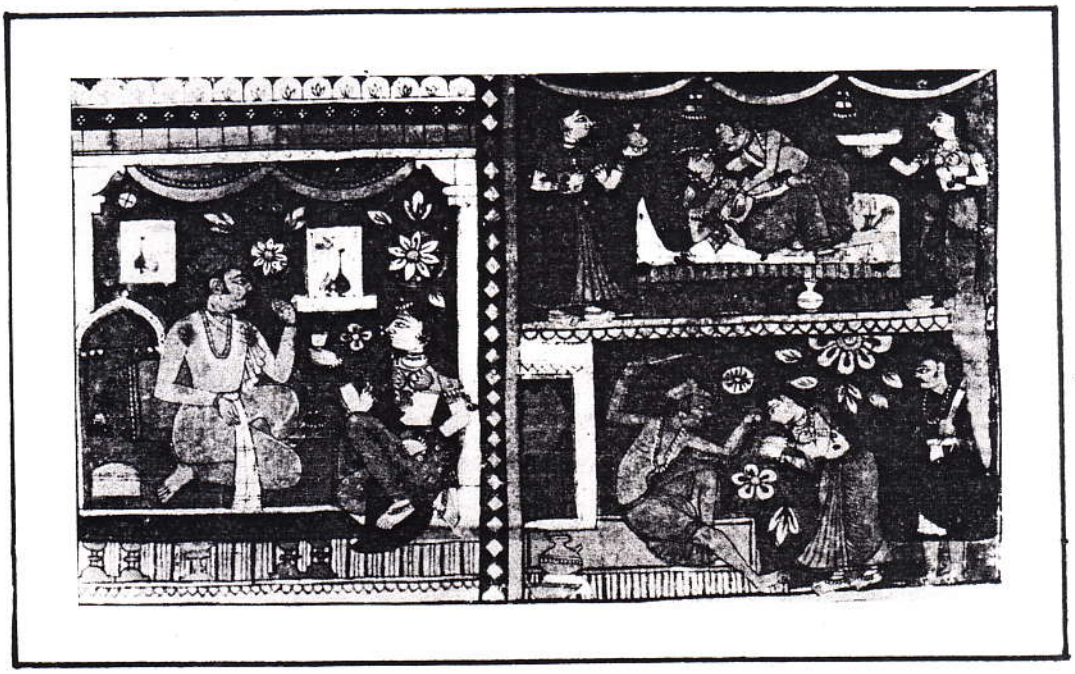

40. वामार्ध : यशोधर और अमृतमती का वार्तालाप
दक्षिणार्ध–ऊर्ध्वभाग : यशोधर और अमृतमती की रति-क्रीडा
दक्षिणार्ध–अधोभाग : कुबड़े द्वारा अमृतमती को ताड़ना (दि.पा.)

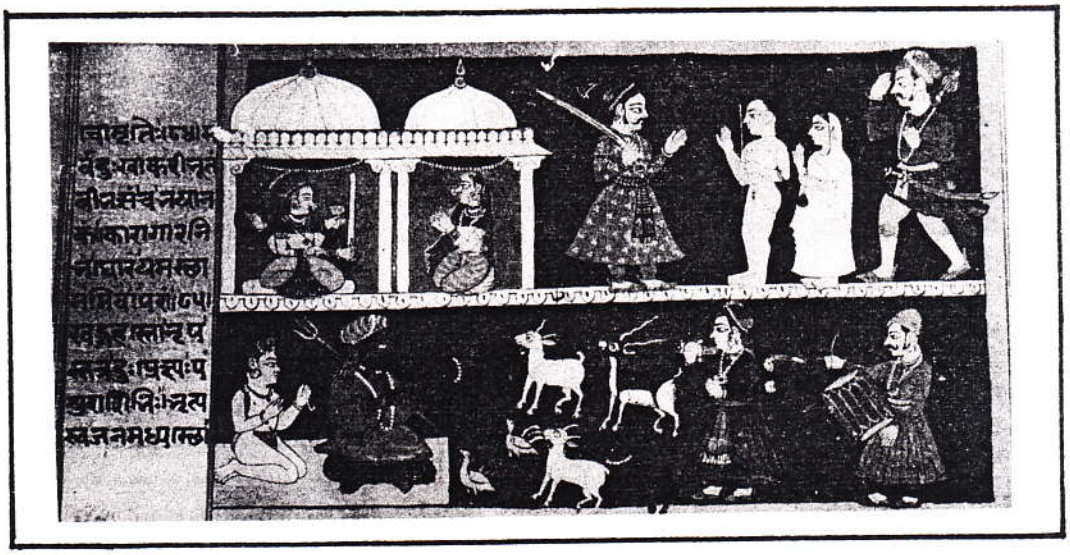

41. भैरवानन्द के आदेशानुसार राजा मारिदत्त द्वारा चण्डिका देवी के समक्ष नरमिथुन तथा अनेक पशु-युगलों के बलिदान का उपक्रम (जय.महा.पा.)